संसदीय क्षेत्र कोटा में अग्रवाल समाज की ओर से आयोजित अन्नकूट महोत्सव में संबोधन

अखिल भारतीय अग्रवाल समाज के अन्नकूट के महाकुंभ में पधारे सभी समाज के बंधुगण, भाइयो और बहनों। मैं आप सबको इस अन्नकूट पर्व की शुभकामनायें देता हूँ।

दिवाली के शुभ अवसर के बाद भगवान को भोग लगा कर हम वर्ष के शुभ दिनों की शुरूआत करते हैं।अन्न के रूप में भगवान को चढ़ा कर, हमारा अन्नदाता और प्रगतिशील हो, और समृद्ध बने, संपूर्ण समाज समृद्ध हो खुशहाल हो, प्रगति करे ऐसी कामना करते हैं।

महाराजा अग्रसेन जी ने हमें जो संदेश दिया था, विचार दिया था, उस विचार और उस संदेश को ले कर, हम अपनी संस्कृति और संस्कारों को ले कर आगे बढ़ें। महाराजा अग्रसेन जी उस काल के वह शासक थे, जिन्होंने राजतंत्र के अंदर लोकतंत्र और लोकशाही से शासन किया।

आज भी हजारों वर्षों बाद भी, उनके विचार आज ऐसे लगते हैं कि उस समय उन्होंने सोचा था कि दुनिया किस तरीके की होगी। दुनिया के अंदर सामूहिकता के साथ, सब मिल कर सब सहयोग से उस कार्य संस्कृति को उस दिन उन्होंने दिया था। उसी कार्य संस्कृति के कारण देश में चले जाएं, विदेश में चले जाएं, अग्रवाल

समाज का व्यक्ति जहां भी रहेगा, अग्रसेन भगवान जी के विचार, उनकी संस्कृति, उनके बताए गए मार्ग से सबका कल्याण करेगा।

आप देखते होंगे कि इस गांव के अंदर एक परिवार भी है तो उसने जनसहयोग से धर्मशाला बनाई। उस समय विद्यालय नहीं हुआ करते थे, तो विद्यालय बनाए। लोगों के इलाज के लिए अस्पताल नहीं हुआ करते थे, तो अस्पताल बनाए। राहगीरों के लिए भोजनशाला बनाई। राजा के शासन में एक राजा कैसा होना चाहए, उस तरीके का विचार अग्रवाल समाज को दिया।

आज वही कार्य संस्कृति है कि कोई भी आपदा आए, कोई भी संकट आए, देश में आए, देश के बाहर आए, उस आपदा और संकट के कारण, हमारे पूर्वजों के संस्कार और अग्रसेन महाराज के विचारों को ले कर आज भी हम सामूहिक संकल्प शक्ति के माध्यम से सामाजिक सेवा और सबके कल्याण का काम करते हैं।

इसीलिए अग्रवाल समाज का संपूर्ण समाज में सम्मान है। धर्म कर्म अपने लिए नहीं, भगवान महावीर का विचार था कि अपरिग्रह, जो कुछ भी है समाज का है। अग्रसेन महाराज जी का विचार था कि कुछ कुछ इकट्ठा करो और समाज को समर्पण कर दो ताकि समाज के हर व्यक्ति के पास व्यापार हो, दो टाइम का भोजन हो।

आज अगर देश में सबसे ज्यादा धर्मशाला होगी तो अग्रसेन भगवान के नाम से अग्रवाल समाज की होगी। सबसे ज्यादा निजी क्षेत्र के शिक्षा विद्यालय होंगे, तो अग्रसेन महाराज जी के विचारों से होंगे। अस्पताल और प्याऊँ के लिए हमारे पूर्वजों

ने कितना पुण्य का काम किया। उन्होंने समाज से धन प्राप्त किया, लेकिन उस धन से भी रोजगार दिया।

समाज में जितने भी लोग अभावग्रस्त और वंचित हैं, चाहे वह किसी भी समाज का व्यक्ति हो, आज कितने परिवारों को अग्रवाल समाज के लोग कुछ न कुछ व्यापार के अंदर, उद्योग के अंदर या सर्विस सेक्टर के अंदर जहां भी अपना कार्य व व्यवसाय करते हैं, हजारों लोगों को रोजगार देने का काम करते हैं।

हमें अग्रसेन महाराज के विचारों को आम विचार बनाना चाहिए। उस समय लोकतंत्र की उन्होंने कल्पना की थी, लोकतंत्र में चर्चा, संवाद, बातचीत के बाद जो निर्णय निकले, उस निर्णय के अमृत से सबका कल्याण हो, अन्नकूट भी इसी तरीके का एक सामूहिक प्रयास है।

सभी ने अपना कुछ न कुछ सहयोग देकर आज अन्नकूट का आयोजन किया है। उसमें जो कुछ बचेगा, वह समाज के गरीब व वंचित लोगों के जीवन बदलने के लिए लगाया जाएगा। इसीलिए कोरोना के समय इसी कार्य संस्कृति के कारण इस संपूर्ण देश के अंदर जिससे जो बन सका, उसने सेवा का काम किया, सामूहिकता से काम किया।

मुझे आशा है कि अग्रसेन महाराज जी के विचारों पर चलकर यह समाज और हमारे पूर्वजों की कार्य संस्कृति और उनके बताए मार्गों पर चलकर हमारे आने वाली पीढ़ी भी अग्रसेन महाराज जी के विचारों को पढ़े, आत्मसात करे और अपने जीवन में उनको विचारों पर चले, यही इस अन्नकूट महोत्सव का विचार है।

मेरा आप सबसे इतनी बड़ी संख्या में मिलना हुआ, आपका प्यार, स्नेह और आशीर्वाद मुझ पर हमेशा रहता है। आपने मुझे विधायक बनाया, सांसद बनाया, जो कुछ भी बना उसमें आप लोगों ने सहयोग किया। मेरी कोशिश रहती है कि जो विश्वास और भरोसा आपने मुझ पर किया है, उस विश्वास और भरोसे को कायम रखूं और आपका सम्मान बना रहे। इसके लिए ऊर्जा और शक्ति से काम करता रहूं।